



International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519

IJSR 2017; 3(5): 120-122

© 2017 IJSR

www.anantaajournal.com

Received: 20-07-2017

Accepted: 21-08-2017

सोमेन्द्र सिंह

शोध छात्र, संस्कृत विभाग, दिल्ली
विश्वविद्यालय, दिल्ली

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में आध्यात्मिक शांति और शिक्षा

सोमेन्द्र सिंह

प्रस्तावना

दिवकाल अद्य अवच्छिन्न अनन्त चिन्मात्रमूर्तये।
स्वानुभूत्येकम आनाय नमः शान्ताय तेजसे।।

सर्वप्रथम कार्य की निर्विघ्न समाप्ति के लिए शान्त तेज रूप वाले परम पिता परमात्मा को नमस्कार करता हूँ। ईश्वर को अनेक ग्रन्थों में शान्त स्वरूप वाला कहा गया है तथा आध्यात्मवाद, निर्वाण, मोक्ष में सभी शान्ति के परिचायक हैं। वर्तमान युग में भौतिकवाद का वर्चस्व है। जिसमें जिन्दगी द्रुत गति के साथ दौड़ रही है। भौतिक दृष्टि से शान्ति की सम्भावना समाप्त हो जाने पर चिन्तनशील मानव ने ऐकान्तिक एवं आत्यन्तिक शान्ति के निमित्त जिस शास्त्र को विकसित किया वही शान्तिशास्त्र कहलाता है। आज अमेरीका, चीन, फ्रांस, अफगानिस्तान, पाकिस्तान, भारत सभी देशों में शान्ति की सम्भावना समाप्त हो रही है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् की कार्यकारिणी सभा बुलाई गई। इस सभा में यह निर्णय लिया गया कि 21वीं शताब्दी के लिए नई राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा तैयार की जाये। यह रूपरेखा आगे चलकर राष्ट्रीय पाठ्यक्रम की रूपरेखा नामक शीर्षक से दिसम्बर 2005 में प्रकाशित हुई। एन0सी0एफ0 ने 21वीं सदी को भौतिकवाद की संज्ञा दी। जिसमें विकास, नवीनीकरण आदि का वर्चस्व दिखाई देता है परन्तु कहीं ना कहीं शान्ति का अभाव दिखाई दिया। इसलिए एन0सी0एफ0 ने शान्ति शिक्षा को पाठ्यक्रम में शामिल किया। वर्तमान में वैश्विक, राष्ट्रीय एवं स्थानीय, प्रत्येक स्तर पर हिंसा का बोलबाला है। अतः समाज में शान्ति स्थापित करने में शिक्षा के महत्व को देखते हुए छात्र छात्राओं को शान्ति शिक्षा दी जानी आवश्यक है। शान्ति शिक्षा इस प्रकार दी जानी चाहिए जिससे छात्र-छात्राओं में शान्ति के प्रति अनुराग पैदा हो, उनमें सहनशक्ति, न्यायप्रियता और आपसी समझ बढ़े तथा सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास हो। इस हेतु महापुरुषों की जीवनी एवं कहानी आदि का श्रवण तथा परिचर्या आयोजित की जा सकें।

शान्तिया आत्मा वा अरे द्रष्टव्यः।

अर्थात् शान्ति के द्वारा ही प्राणी स्वयं का आत्मसाक्षात्कार कर सकता है।
नैतिकता और वैश्विक शांति के लिए मूल्य शिक्षा

विद्या धनम् सर्वधनम् प्रधानम्।
शान्ति धनम् सर्वधनम् प्रधानम्।।

शिक्षा से शान्ति सर्वोपरि कहने को तो शिक्षा से बड़ा अर्थात् विद्या से बड़ा कोई धन नहीं होता। परन्तु आज शान्ति के अभाव में आप किसी भी वस्तु की कल्पना नहीं कर सकते।

शान्ति धनम् सर्वधनम् प्रधानम्
दुःखत्रयाभिघ्नताज्जिज्ञासा तदभिघातके हेतौ।
दृष्टे साआपार्था चेन्नैकान्तत्यन्ततोअ भावात्।।

भौतिक दृष्टि से शान्ति की सम्भावना समाप्त हो जाने पर चिन्तनशील मानव ने ऐकान्तिक शान्ति के निमित्त जिस शास्त्र को विकसित किया वही शान्तिशास्त्र कहलाता है—

Correspondence

सोमेन्द्र सिंह

शोध छात्र, संस्कृत विभाग, दिल्ली
विश्वविद्यालय, दिल्ली

एके सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थ परित्यज्य ये
सामान्यास्तु परार्थमुद्यमभूतः स्वार्थारोधेन ये।
तेअमी मानुषराक्षसाः परहितं स्वार्थाय निघ्नन्ति ये
ये निघ्नन्ति निरर्थकं परहितं ते के न जानीमहे।।

यदि हमारे पास दुनिया का पूरा वैभव और सुख साधन उपलब्ध है। परन्तु शान्ति नहीं है, तो हम भी आम आदमी की तरह ही हैं। संसार में मनुष्यों द्वारा जितने भी कार्य अथवा उद्यम किये जा रहे हैं। सबका एक ही उद्देश्य है शान्ति। सबसे पहले तो हमें ये जान लेना चाहिए कि शान्ति क्या है। शान्ति का केवल अर्थ यह नहीं कि केवल मुख से चुप रहें अपितु मन का चुप रहना ही सच्ची सुख शान्ति का आधार है। कहते हैं कि जहाँ शान्ति है वहाँ सुख है, अर्थात् सुख का शान्ति से गहरा नाता है। लड़ाई दुःख और लालच को भंग करने के लिए शान्ति सशक्त औजार है। कई लोग कहते हैं कि बिना इसके शान्ति नहीं हो सकती। इसके साथ ही भौतिक सुख साधनों तथा अन्य संसाधनों से शान्ति होगी यह कहना भी गलत है। यदि इससे शान्ति हो जाती तो हम मंदिर आदि के चक्कर नहीं लगाते।

धन दौलत और संपदा से संसाधन खरीदे जा सकते हैं, परन्तु शान्ति नहीं। हम यही सोचते रह जाते हैं, कि यह कर लूंगा तो शान्ति मिल जायेगी। आवश्यकतओं को पूरा करते-करते पूरा समय निकल जाता है। और न तो शान्ति मिलती है और न ही खुशी। अर्थात् संसार में प्राणी अपनी स्वार्थ सिद्धी के लिए दूसरे की शान्ति को भंग करने में जरा सी देर नहीं लगाता।

खुशहाल परिवारिक जीवन के लिए जरूरी है कि पहले परिवार में शान्ति रहे। जहाँ शान्ति है वहाँ विकास है। जहाँ विकास है वहाँ सुख है, इसलिए अमूल्य शान्ति के लिए सबसे पहले हमें अपने आप को देखना होगा। अपने बारे में जानना होगा। मैं कौन हूँ कहां से आया हूँ और हमारे अन्दर कौन कौन सी शक्तियाँ हैं, जो हम अपने अन्दर ही प्राप्त कर सकते हैं।

शान्ति का सागर परमात्मा है। जब हमारे अन्दर शान्ति आयेगी तो हमारा विकास होगा। जब विकास होगा तो वहाँ सुख का साम्राज्य होगा। यह प्रक्रिया बिल्कुल सरल और सहज है, जिसके जरिए हम यह जान और पहचान सकते हैं। वर्तमान समय अशान्ति और दुःख के भयानक दौर से गुजर रहा है। ऐसे में जरूरत है कि हम अपने धर्म और शास्वत सत्य को स्वीकारते हुए शान्ति के सागर परमात्मा से अपने तार जोड़े ताकि हमारे भीतर शान्ति का खजाना मिले। इससे हमारे अन्दर शान्ति तो आयेगी ही साथ ही हम दूसरों को भी शान्ति प्रदान कर सकेंगे।

विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रछन्नगुप्तं धनं
विद्या भोगकरी यशःसुखकरी विद्या गुरुणां गुरुः
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परं दैवतं
विद्या राजसु पूजिता न हि धनं विद्याविहीनः पशुः।।

ध्यानवस्था में आत्मास्वरूप को देह से अलग करो और क्रमशः उसे आकाश, हवा, अग्नि, पानी, पृथ्वी की परीक्षा में से निकलते हुए देखो। कल्पना करो कि मेरी देह की बाधा हट गई है और अब मैं स्वतंत्र हो गया हूँ। अब तुम आकाश में इच्छापूर्वक ऊँचे नीचे पखेरुओं की तरह जहाँ चाहे उड़ सकते हो। हवा के वेग से गति में कुछ भी बाधा नहीं पड़ती और न उसके द्वारा जीव कुछ सुखता ही है। कल्पना करो कि बड़ी आग की ज्वाला जल रही है और तुम उसमें होकर मजे में निकल जाते हो और कुछ भी कष्ट नहीं होता है। भला जीव को आग कैसे जला सकती है, उसकी गर्मी की पहुंच तो सिर्फ शरीर तक ही थी। इसी प्रकार पानी और पृथ्वी के भीतर भी जीव की पहुंच वैसे ही है जैसे आकाश में अर्थात् कोई भी तत्व तुम्हें छू नहीं सकता और तुम्हारी स्वतन्त्रता में तनिक भी बाधा नहीं पहुंचा सकता।

किसी भी धर्म में हिंसा और रक्त क्रान्ति की जगह नहीं है। गांधी जी अहिंसा के रास्ते पर चलकर महात्मा के नाम से जाने लगे। जिस समय देश गुलामी की जंजीरों से जकड़ा हुआ था उस समय स्वामी विवेकानन्द प्रेरणा स्रोत बने गुलामी की कायर मानसिकता से उबारा। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिक अध्यात्मवाद सबसे बड़ा वेदांत है। महात्मा बुद्ध ने अहिंसा और शिक्षा के दम वेदांत को घर-घर पहुंचाया।

विश्व शान्ति को लेकर मानवीय दृष्टिकोण

हम जब प्रातः जागते हैं और रेडियो सुनते हैं या समाचार पत्र पढ़ते हैं। तो हमारा सामना उन्ही दुःखद समाचारों से होता है। जो हिंसा, अपराध, युद्ध से परिपूर्ण हो। आज के इस आधुनिक युग में भी यह बात स्पष्ट है कि किसी का भी मूल्यवान जीवन सुरक्षित नहीं है। किसी भी पूर्व पीढ़ी को इतने बुरे समाचारों का सामना नहीं करना पड़ा है। जिनका सामना हम कर रहे हैं भय और तनाव की यह सतत अनुभूति किसी भी संवेदनशील और करुणाशील व्यक्ति को हमारे आधुनिक विश्व के विकास को लेकर गंभीरता से पक्ष उठाने पर विवश करना चाहिए। यह विडम्बना है कि अधिक गंभीर समस्याएं औद्योगिक रूप से अधिक विकसित समाजों से आती हैं। विज्ञान और तकनीक ने कई क्षेत्रों में चमत्कारिक कार्य किये हैं। पर मनुष्य की मूलभूत समस्याएं बनी हुई हैं। अभूतपूर्ण साक्षरता है पर फिर भी लगता नहीं कि इस वैश्विक शिक्षा ने अच्छाई को बढ़ावा दिया हो अपितु इसके स्थान पर केवल मानसिक अशान्ति और असंतोष की बढ़त हुई है। हमारे भौतिक विकास और तकनीक में बढ़त को लेकर कोई संदेह नहीं पर फिर भी यह पर्याप्त नहीं है। क्योंकि अभी तक हम शान्ति और सुख लाने में या पीड़ाओं पर काबू पाने में सफल नहीं हुए हैं।

हम केवल निष्कर्ष निकाल सकते हैं। कि हमारे उन्नति तथा विकास में कोई गंभीर चूक हुई और यदि हमने समय रहते उसे रोका नहीं तो मानवता के भविष्य के लिए उसके विनाशकारी परिणाम होंगे। मैं विज्ञान और तकनीक के विरोध में बिल्कुल भी नहीं हूँ। उन्होंने मानवता के समय अनुभव हमारे भौतिक सुख तथा कल्याण में और जिस विश्व में हम रह रहे हैं। उसके अधिक समय में बहुत अधिक सहयोग दिया है। पर यदि हम विज्ञान और तकनीक पर बहुत अधिक बल दे तो हमारा मानवीय ज्ञान और समझ के उन अंगों से संपर्क टूटने का खतरा है। जो ईमानदारी और परोपकार की ओर प्रेरित करें। विज्ञान और तकनीक में यद्यपि अनगिनत भौतिक सुख उपलब्ध कराने की क्षमता है, पर यह हमारे सदियों पुराने आध्यात्मिक तथा मानवीय मूल्यों का स्थान नहीं ले सकते जिन्होंने विश्व सभ्यता को उनके सभी राष्ट्रीय रूप में जैसा हम जानते हैं एक व्यापक आकार दिया है। कोई भी विज्ञान के अभूतपूर्वक भौतिक लाभ को नकारा नहीं सकता पर हमारी आधारभूत मानवीय समस्याएं बनी हुई हैं।

हम अभी भी उन्हीं का सामना कर रहे हैं। यदि और अधिक नहीं तो दुःख भय तथा तनाव। इसलिए यह तर्कोचित ही है कि एक ओर भौतिक विकास दूसरी ओर आध्यात्मिक मूल्यों के विकास के बीच संतुलन साधा जाए। इस समन्वय को लाने के लिए हमें अपनी मानवीय मूल्यों को पुनर्जीवित करना होगा। मेरा दृढ़ विश्वास है कि कई लोग आज के वैश्विक नैतिक संकट को लेकर मेरी चिन्ता से सहमति रखते हैं और सभी मानवतावादी और धर्म अभ्यासी भी जो हमारे समाज को अधिक करुणामय न्यायपूर्ण और एक समान बनाने को लेकर चिंतित हैं मेरे आग्रह से जुड़ेंगे।

यूनेस्को की 70वीं वर्षगांठ

यूनेस्को की 70वीं वर्षगांठ मुझे इस युग की महत्वपूर्ण उपलब्धि का स्मरण कराती है। मानवीय इतिहास में पहली बार हमारे पास समूचे विश्व के लिए एक संगठन संयुक्त राष्ट्र संघ है। मैं यूनेस्को के लिए महात्मा गांधी के संदेश को स्मरण करता हूँ जिसमें उन्होंने स्थाई शान्ति स्थापित करने के लिए शिक्षा की आवश्यकताओं की

पूर्ति के तत्काल कदम उठाए जाने का आग्रह किया था। और इसके बाद यूनेस्को के प्रारंभिक वर्षों में अपने देश के राष्ट्रपति डॉ० राधाकृष्णन के नेतृत्व का भी स्मरण करता हूँ। 70वीं वर्षगांठ हमारे अब तक की उल्लेखनीय यात्रा के आयोजन का अवसर है। यह उस बुद्धिमता के साथ आगे देखने का अवसर भी है जो हमें समय और अनुभव से प्राप्त हुई है। हम संयुक्त राष्ट्र में जो कुछ भी हासिल करने की कामना करते हैं उसमें सदैव यूनेस्को भूमिका निभाता रहेगा।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने महात्मा गांधी के आदर्शों एवं विचारों को विश्वव्यापी मान्यता प्रदान की अहिंसा की नीति के जरिये विश्व भर में शान्ति के संदेश को बढ़ावा देने के महात्मा गांधी में योगदान को स्वीकारने के लिए ही संयुक्त राष्ट्र संघ ने महात्मा गांधी के जन्म दिवस 2 अक्टूबर को अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस के रूप में विश्व भर में प्रतिवर्ष मनाने का निर्णय वर्ष 2007 में लिया गया। मौजूदा विश्व व्यवस्था में अहिंसा की सार्थकता को मानते हुए संयुक्त राष्ट्र संघ महासभा में भारत द्वारा रखे गये प्रस्ताव को बिना वोटिंग के ही सर्वसम्मति से पारित कर दिया गया। महासभा के कुल 191 सदस्य देशों में 140 से भी ज्यादा देशों ने इस प्रस्ताव को सह प्रायोजित किया। इस प्रस्ताव को भारी संख्या में सदस्य देशों का समर्थन मिलना विश्व में आज भी गांधी जी के प्रति सम्मान और उनके विश्वव्यापी विचारों और सिद्धान्तों की नीति की प्रासंगिकता को दर्शाता है।

महात्मा गांधी ने कहा कि जो बदलाव आप विश्व में देखना चाहते हैं। उसकी शुरुआत स्वयं अपने से करनी होगी। यदि हमें पूरे विश्व में शान्ति स्थापित करनी है तो हमें भारतीय मूल्यों को शिक्षा में समाहित करना होगा। आज सम्पूर्ण विश्व की सबसे बड़ी आवश्यकता शान्ति शिक्षा है। जिससे मानव का जीवन सुखमय हो सके।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. नीतिशतक भर्तृहरि
2. ऋग्वेद
3. ईश्वर कृष्ण सांख्यकारिका
4. मीडिया रिपोर्ट
5. यूनेस्को रिपोर्ट
6. रमन बिहारीलाल समकालीन भारत और शिक्षा
7. एन०सी०ई०आर०टी० रिपोर्ट
8. एन०सी०एफ० रिपोर्ट 2005